International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधी दर्शन में अहिंसा

डॉ. मीना अम्बेश
प्रवक्ता, इतिहास
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

शोध सारांश–गांधीजी ने नैतिकता को जीवन के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया है। नैतिकता के विषय में गांधी जी ने सर्वाधिक महत्व अहिंसा को दिया, अहिंसा को भावात्मक रूप में हम प्रेम भी कह सकते हैं । अहिंसा का संगठन ही गांधीजी की सबसे बड़ी देन थी,अतः उन्होंने अहिंसा का दर्शन ही नहीं दिया, बल्कि उसकी तकनीक भी दी अर्थात उसको किस प्रकार से प्रयोग लाया जाए यह भी सिखाया, उसका तत्वज्ञान ही नहीं दिया बल्कि उसका प्राविधिक या प्रयोगात्मक रूप भी बताया।

शब्द कुंजी– रस्किन, थोरू, टॉलस्टॉय, हिंसा व अहिंसा, जागृत अहिंसा, औचित्य पूर्ण अहिंसा, कायरों की अहिंसा, अहिंसा का भावात्मक अर्थ, मनसा, वाचा, कर्मणा, सैद्धांतिक अहिंसा, अहिंसा की विशेषताएं, आत्म शुद्धि, शक्ति संपन्नता।

गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ । गांधी जी के विचारों के निर्माण में पाश्चात्य वदेशी दोनो प्रभाव पड़े । गांधी जी पर रस्किन की पुस्तकन्दजव जीपे रेंज का काफी गहरा प्रभाव पड़ा, गांधीजी थोरु से भी बहुत प्रभावित थे ,इसके अलावा गांधी जी पर टॉलस्टॉय कि द किंगडम ऑफ गॉड इन विदीन यू का स्थाई प्रभाव पड़ा , गांधीजी ने टॉलस्टॉय के अहिंसा पर व्यक्त विचारों को अपने जीवन का आदर्श बनाया।

यद्यपि प्राचीन काल से बुद्ध की करुणा, अशोक की दया, महावीर का अनेकांत मूलक अहिंसा, तत्पश्चात यीशु के स्वर्ण नियम और टॉलस्टॉय के मानव प्रेम के रूप में अहिंसा की महत्वता चली आ रही है, किंतु गांधी जी ने अहिंसा को व्यक्तिगत दया और परोपकार से आगे बढ़कर सामाजिक धर्म बना दिया।

अहिंसा क्या है– सत्य की वास्तविक साधना अहिंसा के बिना असंभव है, क्योंकि यदि सत्य साध्य है तो अहिंसा साधन। मनुष्य का ज्ञात सत्य सदा ही आंशिक, एकांतिक और एकपक्षीय होता है, क्योंकि कोई मनुष्य इस बात का दावा नहीं कर सकता कि, उसका ही ज्ञान निरपेक्ष रूप से सत्य है, क्योंकि सभी के दृष्टिकोण भिन्न होते हैं, इसलिए सत्य के अन्वेषण में अनेकांतिक दृष्टि को गांधी जी ने अहिंसा कहा है । सत्य सर्वोच्च नियम है, और अहिंसा सर्वोच्च कर्तव्य । अहिंसा की जड़ क्रोध, स्वार्थ ,द्वेष आदि में है, इसलिए राग और द्वेष मुक्त सत्य की साधना हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा से ही हो सकती है। सत्य की खोज का अर्थ है, सत्य के प्रति प्रेम अर्थात मानवीय एकता की अनुभूति, इसलिए अहिंसा को सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ी ईश्वरीय शक्ति माना है। अहिंसा के समीप सारे वैर भावस्वतः ही समाप्त हो जाते हैं अतः यह ऋषियोंकी वास्तविक अनुभूति है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अहिंसा का संगठन ही गांधीजी की सबसे बड़ी देन थी, उन्होंने अहिंसा का दर्शन ही नहीं दिया, बल्कि उसकी तकनीक भी दीअर्थात उसको किस प्रकार से प्रयोग लाया जाए यह भी सिखाया, उसका तत्वज्ञान ही नहीं दिया बल्कि उसका प्राविधिक या प्रयोगात्मक रूप भी बताया। गांधी जी ने अहिंसा को व्यक्तिगत दया एवं परोपकार का सद्गुण ही नहीं माना, बल्कि इसको सामाजिक धर्म भी बनाया। यही नहीं अहिंसा का सामुदायिक संगठन कर उसे सत्याग्रह के रूप में प्रयोग में भी लाए। सत्याग्रही तो सुकरात भी थे और प्रहलाद भी थे, लेकिन गांधीजी ने सारे समाज को सुकरात बनाने का विज्ञान बताया और सारा भारत प्रहलाद बन गया अर्थात अहिंसा को सामाजिक धर्म बना दिया। सामान्यतः हिंसा किसी भी प्राणी का प्राण हरण या उसे कष्ट देना है, किंतु इस अर्थ में पूर्ण अहिंसा असंभव ही है, क्योंकि हमारा जीवन किसी न किसी रूप में हिंसा पर आधारित ही है। इसलिए पूर्ण हिंसा ज्यामितिशास्त्र में यूक्लिड द्वारा दिए गए रेखा या बिंदु की परिभाषा के समान एक अमूर्त सिद्धांत है, अर्थात अहिंसा अमूर्त है, अर्थात जीवन में पूर्ण अहिंसा असंभव है। लेकिन गांधीजी का कहना है कि, क्योंकि अभ्यास से ही व्यक्ति किसी कार्य में पूर्णता प्राप्त करता है, इसलिए हम अपने जीवन में जितनी अधिक सहानुभूति और करुणा की साधना करेंगे, उसी अनुपात में अहिंसा में वृद्धि होगी और उसी रूप में हमारा नैतिक उत्थान भी होगा।

भारतीय परंपरा की तुलना में गांधी जी की अहिंसा, जैनोकी अतिवादी अहिंसा या कठोर अहिंसा और मनु की लचीली अहिंसा के मध्य में स्थित है। अतः गांधीजी इस दृष्टि से व्यवहारिक आदर्शवादी अहिंसक थे, क्योंकि गांधी जी ने व्यवहारिकता और मान्यता के साथ–साथ अहिंसा में केवल बाहरीहिंसा का निषेधही नहीं किया, बल्कि उसे ऊंचे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित माना। गांधीजी के अनुसार अहिंसा का अधिष्ठान हमारा अंतः स्थल होना चाहिए, क्योंकि जिसका हमारे अंतः करण से संबंध नहीं होगा वह नैतिक नहीं हो सकता। अच्छे विचारों से और अच्छे साधनों से यदि हम एक कदम भी आगे बढ़ते हैंतो पर्याप्त है, फल पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। इस संदर्भ में गीता में भी कहा गया है कि,***'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'*** अर्थात कर्म करने पर तुम्हारा अधिकार है फल में नहीं। गांधी जी का कहना था कि जहां अहिंसा है वही अपार धीरज और शांति है, और अहिंसा तो एक महाव्रत है। गांधी जी ने अहिंसा का अभिप्राय बताते हुए कहा कि, मन वचन और कर्म से मानव मात्र को पीड़ा ना पहुंचाना ही अहिंसा है। कुविचार, मिथ्या भाषण,द्वेष सभी हिंसाए हैं। इसलिए अहिंसक ही एक सच्चा प्रेमी हो सकता है। गांधी जी का कहना था कि यदि अहिंसा द्वारा स्वराज्य की प्राप्ति नहीं हुई तो ईश्वर भी हिंसा प्रेमी हो जाएगा।

अहिंसा का अभावात्मक अर्थ

अहिंसा शब्द कोअभावात्मक स्वरूप में व्यक्त किया जाता है या दिखाया जाता है। लेकिन यथार्थ में वह भावात्मक ही है अभावात्मक व्याख्या निम्न विषयों में की जा सकती है

1. वैशेषिक दर्शन में अभाव को एक पदार्थ माना है और इस आधार पर अहिंसा कि अभावात्मक व्याख्या की जा सकती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. हिंसा व अहिंसा दोनों एक दूसरे को काटने वाली पद है, अतः एक के अस्तित्व से दूसरे के होने का सहज बोध होता है।
3. अहिंसा को धर्म मानकर प्रतिष्ठित स्थान मिला है,'***अहिंसा परमो धर्म***'।

अहिंसा की भावात्मक व्याख्या

अहिंसा के भावात्मक व्याख्या के क्रम में इसे सक्रिय प्रेम कहा गया है। रोमियो रोला ने इसी को अनंत धैर्य और असीम प्रेम की संज्ञा दी है। इसलिए गांधीजी के असहयोग आंदोलन के मूल में जिनके प्रति असहयोग किया जाता था, उसके प्रति घृणा नहीं बल्कि प्रेम ही किया जाता था । गांधीजी की दृष्टि में प्रेम और करुणा केवल हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म की ही धरोहर नहीं है, बल्कि सभी धर्मों की समान दुर्लभ संपत्ति है। बाइबिल का यह वाक्य अहिंसा को नैतिक आधार प्रस्तुत करता है कि, जैसा तुम अपने प्रति चाहते हो वैसा ही व्यवहार दूसरों के प्रति करो। मनुष्य एक सामाजिक जीव है, उसकी सामाजिकता से ही सहजीवन की भावना निकलती है, जो अहिंसा का आधार है। अहिंसा ना केवल व्यक्तिगत जीवन का बल्कि समाज का भी नियम है

प्रेम के रूप में अहिंसा अन्य सभी सद्गुणों की जननी है, इसलिए गांधी जी ने कहा था कि अहिंसा के बिना सत्य की साधना संभव नहीं है। गांधीजी के अनुसार सत्य स्वरूप भगवान प्रेम एवं करुणा के वशीभूत होकर ही सब का पालन करते हैं, और ईश्वर प्रेम में ही मानव प्रेम है, क्योंकि मानव ही उसी ईश्वर की प्रति है और उसी का अंश उसमें विद्यमान है।

'मनसा वाचा कर्मणा' अहिंसा की पूर्णता है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा का आधारभूत तत्व ज्ञान अनेकांत दर्शन है। जो व्यक्ति अनेकांत दृष्टि का सहारा लेता है तो वह वस्तुतः मानसिक अहिंसा है, अर्थात अपने को सर्वदा सही और दूसरे को अनिवार्य रूप से गलत मान लेने से बढ़कर और कोई हिंसा नहीं हो सकती है। यही हिंसा का बीज है। इसलिए बापू कहा करते थे, मैं स्वभाव से ही समन्वयवादी हूं, क्योंकि मैं ही सच्चा हूं ऐसा मुझे कभी विश्वास नहीं होता। मानसिक और बौद्धिक अहिंसा की साधना पूर्ण होने पर वाचिक अहिंसा स्वतः ही आ जाएगी। इसमें हमारी भाषा शैली ऐसी होनी चाहिए जिनमें दुराग्रह की ध्वनि ना निकले।

गांधीजी के अनुसार विचार जब किसी अंधआग्रह पर आरुण हो जाता है, तो मतवाद बन जाता है। इसलिए व्यवहारिक अहिंसा के लिए सभी प्रकार के दुराग्रह पूर्ण वैचारिक साम्राज्यवाद एवं अतिक्रमण का परित्याग आवश्यक है। अहिंसा एक विचार पद्धति है, एक जीवन दृष्टि है, यह सब दिशाओं में सब ओर से खुला एक मानस चक्षु है, जो किसी भी विषय को संकीर्ण दृष्टि से देखने का निषेध करता है। वस्तुतः संपूर्ण जीवन ही अहिंसा की रंगशाला है, जो जीवन की अनिवार्यता भी है

1. पारिवारिक जीवन में मां की ममता, पिता का प्यार, अहिंसा के मूर्तिमान स्वरूप है।
2. सामाजिक जीवन में स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ ही अहिंसा है। जीवन अहिंसा के प्रेरणा का निषेध नहीं बल्कि सर्वमंगल कर पारस्परिक त्याग ही है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना हिंसक भावना है।
4. धार्मिक क्षेत्र में अहिंसा की भावना सर्वधर्म समभाव में ही आकर साकार हो सकती है। विचार जब धार्मिक आग्रह वाद पर आरूढ़ होता है, तो वह संप्रदाय बनकर असहिष्णु एवं हिंसक हो जाता है।
5. साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अहिंसा उदार और जीवन मुखी दृष्टि रखती है। साहित्य के क्षेत्र में अहिंसा अनेक वस्तुओं का, अनेक रीति से प्राचीन एवं नवीन ज्ञान करने के लिए प्रेरित करती है, या संचित करने के लिए प्रेरित करती है।
6. राष्ट्रीय राजनीति में क्रमशः निरंकुश राजसत्ता के बदले जनतंत्र की ओर विश्व मानस की प्रवृत्ति अहिंसा की ओर एक शक्तिशाली कदम है।
7. अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अंतरराष्ट्रीय कानून, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय, अंतरराष्ट्रीयसंगठनों का उत्तरोत्तर विकास, अहिंसा का ही संकेत है।
8. दंड विधान में प्राण दंड उठाना, जेल खानों को सुधार गृह में परिवर्तित करना, अहिंसा का ही एक रूप है।

गांधी जी की दृष्टि में अहिंसा की पूर्णता मन वचन कर्म तीनों में ही निहित है। एकांतिक दृष्टि भी मानसिक हिंसा है। इसलिए चिंतन के क्षेत्र में हमें उदार, व्यापक और अनेकांतिक दृष्टि अपनाने चाहिए। बाइबिल में भी कहा गया है कि हमारे पिता के घर में अनेक भवन है, जिसका अर्थ यही है कि चिंतन और ज्ञान के क्षेत्र में अपने आप को एक मात्र सत्य का ठेकेदार समझना अहंकार तो है ही, मूर्खता से भी कम नहीं है। गांधीजी की यही देन है कि, उन्होंने इसे धार्मिक क्षेत्र के अलावा राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र में भी प्रयोग कर दिया। इसलिए उन्होंने अहिंसा को एक नई परिभाषा देते हुए कहा कि, यदि अहिंसा का अर्थ प्रेम होता है तो फिर वहां शोषण और उत्पीड़न का स्थान नहीं होगा। प्रेम और परिग्रह, प्रेम और उत्पीड़न ,प्रेम और विषमता साथ साथ नहीं चलते । अहिंसा, हिंसा से श्रेष्ठ है। वे अहिंसा को विश्व की सर्वाधिक गतिशील प्रक्रिया मानते हैं, क्योंकि इसमें सफलता सुनिश्चित है। अहिंसा में संघर्ष की स्थिति अधिक सक्रिय है एवं वास्तविक होती है। आतताई के विरुद्ध संघर्ष में बदले की भावना का प्रयोग किया जाए तो उसकी क्रूरता और भी बढ़ेगी, किंतु उसका मानसिक विरोध उसे आगे बढ़ने से रोकेगा। गांधीजी हिंसा को कायरता से श्रेष्ठ मानते हैं। गांधी जी ने अहिंसा को कायरता का पर्याय मानने वालों से कहा कि, कायरता का अपमान पूर्ण जीवन जीने से हिंसात्मक मार्ग ही सही है। क्योंकि हिंसा के द्वारा व्यक्ति कम से कम अपने सम्मान की रक्षा तो कर सकता है। अहिंसा शक्तिशाली अस्त्र है। अहिंसा स्वेच्छा से जानबूझकर प्रतिशोध का एक प्रतीक है। अहिंसा समाज के हित में स्वेच्छा से अपने आप पर लगाया गया नियंत्रण है। मन वचन कर्म अहिंसा की पूर्णता है। गांधीजी के अनुसार वध ना करना ही अहिंसा नहीं है, स्वार्थ अथवा क्रोधवश किसी का जीवन हरने या दुखी करने का नाम हिंसा है, ऐसा कार्य करने से अपने आप को रोकना अहिंसा है। अहिंसा निस्वार्थ है, निस्वार्थ होकर अपने शरीर की चिंता किए बिना सत्य को पहचानना तथा अन्य व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना अहिंसा है। गांधी जी ने अहिंसा के महत्व को दर्शाते हुए यह कामना की है कि व्यक्ति को सैन्य शक्ति पर आधारित राज्यों का समर्थन नहीं करना चाहिए यदि सेना

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में भर्ती होने की अनिवार्यता सामने आए तो उसका भी प्रतिकार करने के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर देना उचित है

गांधीजी के अनुसार अहिंसा की पांच विशेषताएं

1. अहिंसा में मानव सुलभ संपूर्ण आत्म शुद्धि अंतर्निहित होती है।
2. अहिंसा की शक्ति अहिंसक व्यक्ति की हिंसा करने की योग्यता नाकी इच्छा के अनुपात पर निर्भर करती है।
3. अहिंसा बिना किसी अपवाद के हिंसा से श्रेष्ठ है, अर्थात अहिंसक व्यक्ति की शक्ति, संपन्नता उसके हिंसक व्यवहार की तुलना में अधिक होता है।
4. अहिंसा में पराजय का प्रश्न कभी उत्पन्न नहीं होता, जबकि हिंसा की परिणिति निश्चित ही पराजय है।
5. अहिंसा में अंततः विजय सुनिश्चित है की, मान्यता सर्वव्यापी है।

व्यक्ति किसी एक कार्य में अहिंसा तथा दूसरे में हिंसा का अनुमोदन नहीं कर सकता। ऐसा करने पर अहिंसा एक नीति मात्र रह जाएगी, ना कि जीवन शक्ति। गांधी जी ने अहिंसा की सफलता के लिए निम्न आधार प्रस्तुत किए हैं:–

1. अहिंसा मानव प्रजाति का नियम है और हर दृष्टि से पार्श्विक शक्ति से श्रेष्ठ है।
2. प्रेम रूपी ईश्वर में विश्वास नहीं रखने वालों को अहिंसा की उपलब्धि प्राप्त नहीं होती।
3. अहिंसा में आत्मसम्मान एवं गौरव की रक्षा होती है, किंतु इसके द्वारा चल संपत्ति तथा भूमि की सुरक्षा पर आए नहीं हो पाती लेकिन फिर भी सशस्त्र रक्षकों को रखने के बजाय अहिंसा का स्वभाव है।

अहिंसक वीरता

निर्भयता और आत्मबल के बिना अहिंसा नहीं चल सकती ।अहिंसा,धृष्टता के सामने कायरता पूर्ण आत्मसमर्पण नहीं है, बल्कि धृष्टता और अन्याय के प्रतिकार के लिए अत्यंत सक्रिय आक्रामक एवं प्रभावशाली उपक्रम है। उन्होंने यंग इंडिया में स्पष्ट कहा था कि कायरता से तो हिंसा अच्छी है, अर्थात गांधीजी कायरता की तुलना में हिंसा को श्रेष्ठ मानते थे।

अहिंसा का समाजशास्त्र

गांधीजी ने अहिंसा को जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रयोग कर एक नई परिभाषा और व्याख्या की।अहिंसा का अर्थ यदि प्रेम होता है, तो फिर वहां शोषण और उत्पीड़न का स्थान नहीं होगा। प्रेम और उत्पीड़न, प्रेम और विषमता साथ–साथ नहीं चल सकते, यदि हत्या हिंसा है तो शोषण भी हिंसा है ।

अहिंसक क्रांति

गांधीजी ने अहिंसा की केवल नई व्याख्या प्रस्तुत नहीं की, बल्कि अहिंसक समाज व परिवार का विचार भी रखा। उनका मानना था कि क्रांति का अर्थ यदि मान्यता, आकांक्षा और जीवन के मूल्यों में आधारभूत परिवर्तन है, तो यहां बल प्रयोग का स्थान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नहीं है। मान्यता, विचार से बदलती है बंदूक से नहीं, बंदूक भले ही फोड सकती है,फेर नहीं सकती अर्थात बदल नहीं सकती।

अहिंसा की तीन अवस्थाएं

गांधी जी का विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य में चैतन्य शक्ति एवं विवेक होता है तथानैतिक प्रयास द्वारा चेतन शक्ति को जागृत करके उसका हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा की निम्नलिखित तीन अवस्थाएं हैं:–

1. **जागृत अहिंसा**:– गांधीजी के अनुसार अहिंसा का यह सर्वोत्कृष्ट रूप है यह बहादुर व्यक्तियों की अहिंसा है और अहिंसा के इस रूप से ही असंभव को संभव में बदलने की क्षमता है।
2. **औचित्य पूर्ण अहिंसा**:– अहिंसा के इस रूप को जीवन के किसी क्षेत्र में विशेष आवश्यकता पड़ने पर, औचित्य के अनुसार एक नीति के रूप में अपनाया जा सकता है। यह निर्मल व्यक्तियों की अहिंसा याअसहाय व्यक्तियों का निष्क्रिय प्रतिरोध होता है, फिर भी यदि इसका पालन इमानदारी से एक नीति के रूप में किया जाए तो कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।
3. **कायरों की अहिंसा**:– इसअहिंसा को डरपोक व कायरो की अहिंसा कहने के स्थान पर कायरों की निष्क्रिय अहिंसा कहना अधिक उपयुक्त है ।

गांधी जी के अनुसार अहिंसा और कायरता आग और पानी की तरह कभी भी साथ साथ नहीं रह सकते। गांधीजी के अहिंसा को व्यवहारिक और विरोधी भावना से पूर्ण बताकर समय–समय पर उनकी आलोचना भी की गई, जैसे कि:–

1. हिंसा मानव के स्वभाव का अंश है और जैविक विकास की आवश्यकता है।
2. कष्ट सहन करना कायरता है, क्योंकि प्रतिद्वंदी की हिम्मत चुप रह जाने से अधिक बढ़ती है।

किंतु यह आलोचना सारहीनहै क्योंकि गांधीजी के अहिंसा अत्यंत विस्तृत है और व्यापक है, कायरता का उसमें कोई स्थान नहीं है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि अधिकांश व्यक्ति, केवल किसी को ना मारना ही हिंसा समझते हैं। परन्तु गांधी जी इसे अहिंसा का आंशिक अर्थ बताते हैं। गांधीजी के अनुसार कुविचार ,उतावलापन, मिथ्या भाषण, किसी का बुरा चाहना भी हिंसा की श्रेणी में आता है। अतः स्पष्ट है कि गांधीजी के अहिंसा में वैचारिक सावधानी की नितांत आवश्यकता है। वाणी और संवेगो को भी नियंत्रित करना आवश्यक है। अतः गांधीजी के अहिंसा की अवधारणा मन वचन और कर्म से संबंधित है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा सर्वोच्च नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है। अहिंसा केवल एक दर्शन नहीं है बल्कि कार्य करने की पद्धति है,हृदय परिवर्तन का साधन है। उन्होंने अहिंसा को व्यक्तिगत आचरण तक ही सीमित नहीं रख कर मानव जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में लागू किया, इसका कारण था कि गांधीजी व्यवहारिक थे। इसलिए उन्होंने मनुष्य या संपत्ति को हानि पहुंचाने वाले जीव जंतुओं को मारने की अनुमति दी है। अपने आश्रम में तड़पती हुई मरणासन्न बछड़े को जहर देने की अनुमति दी। यहां हिंसा अवश्य हुई किंतु इसके पीछे असीम दया तथा परदुख की पीड़ा का भाव था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. मनुस्मृति 2/1
2. मनुस्मृति 6/92
3. ईशावास्योपनिषद्
4. वृहदारण्कोपनिषद्
5. गाँधी, मोहनदास करमचन्द, ऑटोबायोग्राफी खण्ड –2
6. हरिजन, अक्टूबर, 3, 1936
7. यंग इण्डिया, अप्रैल 3, 1994,
8. हरिजन सेवक 9 मार्च 1947
9. सत्याग्रह आश्रम का इतिहास, पूर्वोक्त
10. गाँधी मोहनदास करमचंद, यंग इण्डिया 2 फरवरी 1946
11. गाँधीजी आरोग्य की कुंजी नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद सन 2000
12. राजनीति गाँधी के सपनों का स्वराज जनसत्ता 1 अक्टूबर 2016
13. गाँधीजी और ग्राम स्वराज्य के मायने पत्रिका 24 अक्टूबर 2013